Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अमरकांत के बाल-साहित्य का समाजशास्त्रीय अनुशीलन

डॉ. महेशकुमार ए. खांट

makhant86 @ gmail.com

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

अमरकांत जी एक बाल साहित्यकार भी हैं। उनका वाल-साहित्य वच्चों की रूचि के अनुसार है। उन्होंने सरल भाषा में बाल साहित्य को निर्मित किया है अतः वच्चे उसे आसानी से समझ पाते हैं। उन्होंने अपने कुछ बाल साहित्य में रंगों और चित्रों का भी प्रयोग किया है जो बच्चों को अपनी और आकर्षित करता है। बालशौरी रेड्डी वाल साहित्य के विषय में कहते हैं- "मेरी दृष्टि में वाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो, रोचक हो, उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करनेवाला हो । बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो, उसमें बुनियादी तत्त्वों का चित्रण हो । कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल, सहज और समझ में आनेवाला हो, सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करनेवाला हो। "[१]

जिस तरह समाजशास्त्र में समाज महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है उसी तरह अमरकांत जी के बाल साहित्य में भी समाज महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। अमरकांत के बाल साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन हम निम्नलिखित रूप में कर सकते हैं

- **सामाजिक अनुशीलन :**

परिवार : प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य रहा है। समाज में परिवार अत्यधिक महत्त्वपूर्ण समूह है। मानव समाज की समस्त सामाजिक संस्थाओं में परिवार एक आधारभूत और सर्वव्यापी संस्था है। अमरकांत जी के बाल साहित्य में जिस परिवार का वर्णन है वह अधिकांश निर्धन है। 'नेउर भाई' का 'मैं' अर्थात् लेखक एक गरीव परिवार का लड़का है। गरीबी के कारण उसे भीतर से हीनता का भाव आ जाता है, जिसके कारण वह पढ़ना भी नहीं चाहता है "उस समय में आठवीं कक्षा में पढ़ता था। मैं बहुत ही गरीब घर का लड़का था। मेरे मन में सदा हीनता की भावना बनी रहती थी, इसलिए पढ़ने में मेरी तबीयत लगती नहीं थी। "[२] जबकि आलोक एक सपन्न परिवार का लड़का है। उसके पिता का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। शिक्षक भी उससे डरते थे "आलोक का इतना रूतवा था कि टीचर भी उससे कुछ नहीं बोलते थे, इसलिए रामचन्द्र

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

को टीचर से शिकायत करने की भी हिम्मत नहीं होती थी। "[३]

'एक स्त्री का सफर' बड़ागाँव नामक ग्राम की एक गरीव परिवार की लड़की सरोस्ती की कथा है। सरोस्ती के परिवार में कुल सदस्यों की संख्या सात है। सरोस्ती जो कि पोलियोग्रस्त थी, उसका विकास हो रहा था। अमरकांत जीने अपने बाल साहित्य में बच्चों और उसके परिवार का वर्णन तो किया ही है साथ ही साथ उसने पशु-पक्षियों और उसके परिवार का भी वर्णन किया है। 'खूँटा में दाल है' इसका स्पष्ट उदाहरण है। इसमें एक चिड़िया धारा का वर्णन है जो अपने परिवार के साथ बहुत ही खुशी पूर्वक रहती थी। अमरकांत जी द्वारा रचित 'सुग्गी चाची का गाँव' एक लघु बाल उपन्यास है। इसमें सुग्गी चाची के परिवार का वर्णन किया गया है। 'वानर सेना' बाल उपन्यास में मुख्य रूप से देश की आजादी और आजादी के क्रम में बाल सेना के योगदान को दर्शाया गया है।

विवाह: विवाह एक सामाजिक संस्कार है जिसके द्वारा व्यक्ति गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है। विवाह वह संस्था है, जो नर और नारी को पारिवारिक जीवन में प्रवेश दिलाती है। वर्तमान समाज में विवाह को अत्यंत आवश्यक माना जा रहा है। समाज के विकास के लिए विवाह आवश्यक है। एक पिता अपनी बेटी का विवाह वहुत बड़ा दायित्व समझता है और इस दायित्व बोध को हम अमरकांत की कहानियों और उपन्यासों में देख पाते है। विवाह का वर्णन है- 'एक स्त्री का सफर' नामक बाल साहित्य में एक गरीव किसान सुखई को अपनी इकलौती बेटी सरोस्ती के विवाह की चिन्ता है "वह चाहता था कि मरने के पहले सरोस्ती के हाथ पीले कर देता । कोई योग्य व्यक्ति उसका हाथ थाम लेता । "[४] सरोस्ती को जब इस वात की जानकारी होती है तो वह अपने पिता से स्पष्ट शब्दों में कहती है कि बाबूजी आप मेरी चिता क्यों करते हो। मैं शादी नहीं करूँगी।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

- **आर्थिक अनुशीलन :**

आर्थिक दृष्टि से समाज को तीन भागों में विभाजित किया जाता है उच्च वर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग। समाज का वह छोटा समूह जिसके पास आर्थिक समृद्धि होती है एवं जो स्वयं अनुत्पादन भूमिका अदाकर सम्पन्नता के साथ वैभवता का जीवन जीता है, उच्चवर्ग की श्रेणी में रखा जाता है। मध्यवर्ग समाज के बीच का हिस्सा है। मध्यवर्ग विशेषतः बुद्धि प्रधान वर्ग माना गया है। निम्नवर्ग के अन्तर्गत समाज का वह हिस्सा आता है, जो अपने सारा जीवन उच्च तथा कुछ हद तक मध्यवर्ग की सेवा में व्यतीत कर देता है। वह उत्पादक वर्ग होता है ।

अमरकांत के वाल साहित्य 'नेउर भाई' के आलोक को उच्च वर्गीय पात्र के रूप में दर्शाया गया है। उच्चवर्गीय पात्रों के गुण आलोक के अंदर विद्यमान है। उसे स्कूल की सभी विद्यार्थी नीच दिखाई देते है। यहाँ पर उच्चवर्गीय पात्र आलोक, रामचन्द्र जैसे निम्नवर्गीय पात्रों पर तरह-तरह का अत्याचार करता है। उसके अत्याचार का विरोध कोई नहीं करता है, लेकिन मध्यवर्गीय पात्र गजाधर उसका विरोध करता है।

'जज का भी जज' वाल साहित्य में मध्यवर्गीय पात्र रज्जू है, जो अपने से कमजोर लोगों को सताता है। अपने से कमजोर लड़को पर अत्याचार किया करता था। तो दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी मध्यवर्गीय पात्र हैं जो मध्यवर्गीय पात्रों द्वारा किये जा रहे अत्याचार का विरोध भी करते है और उसे उसके द्वारा अपने से कमजोर पर किये जा रहे अत्याचार की सजा भी देते हैं।

'गोपा को नसीहत' वाल साहित्य में 'गोपा' भी बहुत ही शरारती और बदमाश है। गोपा को जब घर लौटने में बहुत देर हो जाती है तो वह बुरी तरह डर जाता है कि आज उसकी पिटाई अवश्य होगी। पिटाई से बचने के लिए वह पेट दर्द का बहाना बनाता है। उसके द्वारा किया गया शरारत इतने तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि वह अपनी शरारतों से अपनी यादी को भी वहुत परेशान किया करता है। इतना ही नहीं उसे छोटे-छोटे

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जानवरों को परेशान करने में बड़ा मजा आता। वह अपने से छोटे उम्र के बच्चों को इकट्ठा करके खेल के बहाने कई प्रकार से बेवकूफ बनाता और उसे तंग करता "कभी वह छोटे बच्चों को बाग-बगीचे में ले जाता है। वहाँ पहुँचकर डरी हुई सूरत बनाकर कहता, अरे, वहाँ तो एक भूत रहता है। बच्चों को उठा ले जाता है। भैया, मैं तो भागता हूँ। "[५]

अमरकांत ने बाल साहित्य में पशु पक्षियों का भी वर्णन किया है। उसने केवल वर्णन ही नहीं किया बल्कि मध्यवर्गीय पात्रों के समान अपने अधिकारों के लिए लड़ते भी दर्शाया है। अमरकांत कृत बाल-साहित्य 'खूँटा में दाल हैं' में हमें इसका स्पष्ट उदाहरण दिखाई पड़ता है। धीरा चिड़िया वहुत सी मेहनती है। वह अपने अधिकार के लिए जागरूक है। अपने अधिकार की प्राप्ति के लिए वह संघर्ष करती है और अन्ततः विजयी भी होती है। 'वानरसेना' बाल साहित्य के मध्यवर्गीय पात्र केदार है। उसने अपने देश के प्रति अपने कर्तव्यों को समझा। देश की आजादी में उसका भी कुछ दायित्व होना चाहिए, इसको समझा। इसीलिए उसने अपने मित्रों के साथ मिलकर एक 'वानर सेना' नामक संगठन को तैयार करता है जो देश के हित में विभिन्न क्रिया-कलाप में भाग लेता है। अमरकांत जी लिखते हैं- "केदार ने सूरज की मदद से वानर सेना बना ली। वानर सेना में शम्भू, बलराम, पिलपिली, मालवावू, गनेश, चन्द्रमा, झल्लन आदि बच्चे रखे गये । [६]

इस प्रकार अमरकांत ने अपने बाल साहित्य में उच्च वर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग तीनों को चित्रित किया है। सभी वर्ग अपनी-अपनी मानसिकता के अनुरूप कार्य करते हुए दिखते है। उच्च वर्ग का चित्रण शोपक के रूप में हुआ है तो मध्यवर्ग का चित्रण शोपक, शोषित सामाजिक परिवर्तन कर्ता के रूप में तथा निम्नवर्ग को शोपित के रूप में दर्शाया गया है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

- **राजनीतिक अनुशीलन :**

अमरकांत जी को राजनीति का बहुत अच्छा ज्ञान था। उन्होंने अपने कहानी और उपन्यास में राजनीति का विशद् वर्णन किया है, उसी प्रकार वाल साहित्य में बच्चों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। अतः उनके वाल साहित्य में राजनीति का वर्णन बहुत कम मिलता है। उन्होंने अपने बाल उपन्यास 'वानर सेना' में राजनीति का वर्णन किया है। और वह कहीं न कहीं राष्ट्रीयता से जुड़ी है । 'वानरसेना' की राजनीति देश को आजादी दिलाने के लिए है। जब केदार भारत देश के महापुरुषों की जीवनी को पढ़ता है तभी से उसके भीतर कहीं न कहीं राजनीति का वीच अंकुरित हो उठता है। वह भी देश की राजनीति में प्रवेश करना चाहता है। पुस्तकालय का निर्माण कर उसका 'आजाद' नाम रखना और कुछ नहीं उसके मन की राष्ट्रीयता है और आजादी की लड़ाई में भाग लेने के विपय में सोचना उनकी राजनीति है। अमरकांत ने हड़ताल के माध्यम से भी राजनीति को प्रस्तुत किया है। हड़ताल भी राजनीति का ही अंग है। केदार और उनके साथियों के साथ-साथ अन्य लड़के भी देश की राजनीति में भाग लेने लगे । उनलोगों ने मिलकर स्कूल में हड़ताल कर दिया। हड़ताल करके वे सभी खुश थे ।

वानर सेना के माध्यम से वे देश की राजनीति में भाग लेना चाहते हैं। इसके माध्यम से वे देश को आजाद करवाना चाहते हैं। और वे गाँधी जी का साथ देना चाहते हैं। सूरज केदार से कहता है "देखो, गाँधीजी राम के समान हैं। अंग्रेज सरकार रावण की तरह अत्याचारी है। जिस तरह रामने रावण से युद्ध किया था, उसी तरह गाँधीजी अंग्रेजी सरकार से लड़ाई कर रहे हैं। राम का साथ वन्दरों ने दिया था। हम वच्चे भी गाँधीजी का साथ देंगे। वालक बन्दर के समान हैं, और वे गाँधीजी के आन्दोलन में मदद दे सकते हैं। "[७]

इस प्रकार केदार और उनके साथियों ने वानर सेना और अपने विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों के माध्यम से देश की राजनीति में भाग लेता है और देश को आजाद करवाने में अपना योगदान देता है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

- **धार्मिक अनुशीलन :**

अमरकांत जी के बाल साहित्य का धार्मिक दृष्टि से अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अमरकांत ने अपने वाल साहित्य में कहानी और उपन्यास की भाँति हिन्दु-मुस्लिम या साम्प्रदायिक दंगे का वर्णन नहीं किया है। वल्कि उन्होंने मानवता, भाईचारा आदि के रूप में धार्मिक अनुशीलन का वर्णन किया है। अमरकांत के बाल साहित्य 'नेउर भाई' के गजाधर में मानवता की भावना विद्यमान है। वह किसी को भी कष्ट, दुःख या किसी भी समस्या में पाता तो तुरन्त उसकी सहायता करता। किसी को चोट लगने पर वह तुरन्त पट्टी करने लगता । उसके अंदर मानवता की भावना होने कारण ही वह अत्याचारी आलोक से लड़ने के लिए तत्पर होता है।

'जज का भी जज' बाल साहित्य के रज्जूनाला में भी मानवता की भावना विद्यमान है। मानवता के कारण ही रज्जू नाला का रज्जू कटहल के साथ प्रतियोगिता होती है और प्रतियोगिता में रज्जू नाला रज्जू कटहल को हरा देता है। मानवता की भावना के कारण ही वह रज्जू कटहल को सजा भी देता है। उसी प्रकार 'गोपा को नसीहत' बाल साहित्य के साधु में भी मानवता की भावना विद्यमान है। मानवता की भावना के कारण ही साधु सभी बच्चों को परेशान करनेवाले गोपा की कलाई को जोर से पकड़ता है। ताकि वह अब से किसी वच्चा को परेशान न करे। वह अन्त में गोपा से कहता है- "अच्छा जाओ, आज मैं तूमें छोडे देता हूँ। पर याद रखना मैं हमेशा इधर आता रहता हूँ। "[८]

अमरकांतजीने अपने बाल साहित्य में पशु पक्षियों के भीतर भी मानवता की भावना को दर्शाया है। 'खूँटा में दाल है' नामक बाल साहित्य का प्रमुख पात्र धीरा नाम की एक चिड़िया है। वह अपनी सहायता करने के लिए अनेक लोगों के पास जाती है लेकिन उसकी सहायता कोई नहीं करता है। उसकी सहायता एक साधारण सा चूहा करता है। चूहे के भीतर मानवता की भावना विद्यमान थी। मानवता की भावना के कारण ही उसे

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

चिड़िया से सहानुभूति हो जाती है और चिड़िया से कहता है "चलो मैं तुम्हारा साथ दूँगा। "[९]

इस प्रकार अमरकांत जीने अपने बाल साहित्य में समाज के विभिन्न पहलुओं का समाजशास्त्रीय आधार पर चित्रण किया है और वे इसके चित्रण में सफल भी रहे हैं।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

संदर्भ :

१. देवसरे, डॉ. हरिकृष्ण (संपा.), बाल साहित्य रचना और समीक्षा, प्रथम संस्करण : १९७९, शकुन प्रकाशन, पृष्ठ संख्या-२७

२. नेउर भाई (मूल प्रति), अमरकांत, पृष्ठ संख्या १

३. वहीं, पृष्ठ संख्या-३

४. एक स्त्री का सफर, अमरकांत, संस्कार १९९६, कृतिकार प्रकाशन, इलाहावाद, पृष्ठ संख्या १०

५. गोपा को नसीहत (मूल प्रति), अमरकांत, पृष्ठ संख्या २

६. वानर सेना, अमरकांत, संस्करण १९९६, कृतिकार प्रकाशन, इलाहावाद, पृष्ठ संख्या-२७

७. वही, पृष्ठ संख्या २६

८. गोपा को नसीहत (मूल प्रति), अमरकांत, पृष्ठ संख्या-४

९. खूँटा में दाल है, अमरकांत, संस्करण १९९१, कृतिकार प्रकाशन, इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या-२४